
Shri Giridharisharana Ashtakam Stotram

श्रीगिरिधारिशरणाष्टकस्तोत्रम्

Document Information

Text title : Shri Giridharisharana Ashtaka Stotram

File name : giridhArisharaNASHTakamStotram.itx

Category : deities_misc, gurudev, nimbArkAchArya, aShTaka, stotra

Location : doc_deities_misc

Author : shrIjI

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : January 28, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 28, 2023

sanskritdocuments.org

Shri Giridharisharana Ashtakam Stotram

श्रीगिरिधारिशरणाष्टकस्तोत्रम्



यशस्वी गिरिधारी य ब्रह्मचारी मडाप्रती ।

वृन्दावननिवासी स जयतीह सदा भुवि ॥ १ ॥

जिनका सुयश सर्वत्र परिव्याप्त है जो प्रबल प्रतानुगामी

है । वृन्दावन में निवास करने वाले ब्रह्मचारी श्रीगिरिधारीशरणा की इस जगत् में सदा ही उत्तम जय हो ॥

१ ॥

निम्बार्कसम्प्रदायी वै युग्माऽङ्घ्रिसमुपासकः ।

जयति सर्वदा प्रेष्ठो राधामाधवजापकः ॥ २ ॥

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के परम अनुयायी श्रीयुगलराधामाधव के श्रीयरणकमलों की उपासना में अभिरत और
उन्हीं का सतत जाप करने वाले अतिश्रेष्ठ ब्रह्मचारी श्रीगिरिधारीशरणा की सदा जय हो ॥ २ ॥

जयपुरनृपश्रेष्ठ-श्रीमाधोसिंहसद्गुरुः ।

सद्भिश्चात्र सदा पूज्यो जयति प्रजभावुकः ॥ ३ ॥

जयपुर के मडाराजा सवाँ श्रीमाधवसिंह के जो गुरु रहे हैं और सन्त-महात्माओं के द्वारा भली प्रकार प्रपूजित
रहे हैं । प्रजधाम में भावना रचने वाले ब्रह्मचारी श्रीगिरिधारीशरणा की सदा जय हो ॥ ३ ॥

सङ्कल्पसिद्धमेधावी विद्भ्रजनप्रपूजितः ।

उर्ध्वपुण्ड्रधरो विप्रो जयत्यानन्दसम्प्रदः ॥ ४ ॥

परम मेधावी सङ्कल्पसिद्ध विद्भ्रजनों के द्वारा प्रपूजित

गोपीचन्दन से उर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करने वाले सबको

आनन्द देने में तत्पर विप्रवंशोद्भव ब्रह्मचारी श्रीगिरिधारी-शरणा की जय हो ॥ ४ ॥

राधाकृष्णपदाम्भोज-ध्यानलीनो वरप्रदः ।

गोपालमन्त्रराजस्य जापको जयतीह य ॥ ५ ॥

श्रीराधाकृष्ण भगवान् के यरणारविन्दों में ध्यानमग्न उत्तम वरदायक श्रीगोपालमन्त्रराज के जाप करने में तत्पर
अवेविध ब्रह्मचारी श्रीगिरिधारीशरणा की इस जगत् में जय-जयकार हो ॥ ५ ॥

यमुनाऽम्भः सदासेवी यमुनास्नानतत्परः ।
प्रपन्नरक्षको भक्तो जयति उरिचिन्तकः ॥ ६ ॥

श्रीयमुनाञ्चु के निर्मल जल का पान करने वाले और श्रीयमुनाञ्चु में डी स्नान करने में लगे हुए और शरणागत
जनों की रक्षा करने वाले श्रीहरि के चिन्तन में निमग्न परमभक्त ब्रह्मचारी श्रीगिरिधारीशरणाञ्चु की सब समय
जय हो ॥ ६ ॥

माधवमन्दिरे दिव्ये धाम्नि वृन्दावने सदा ।
मन्त्रानुष्ठानसम्पन्नो जयति भवु पावनः ॥ ७ ॥

दिव्यधाम वृन्दावनस्थ राधामाधव मन्दिर में सदा ही श्रीगोपालमन्त्रराज के अनुष्ठान में प्रवृत्त जिनका परम पावन
स्वरूप है जैसे ब्रह्मचारी श्रीगिरिधारीशरणाञ्चु की सदैव जय हो ॥ ७ ॥

कदम्ब-कदलीकुञ्जे युग्माङ्घ्रिस्मरणे रतः ।
अवेग्य ब्रह्मचारी वै जयति नित्यदा भुवि ॥ ८ ॥


कदम्ब कदली आदि कुञ्जों में बैठकर अपने आराध्य का स्मरण करने में अभिरत जैसे ब्रह्मचारी
श्रीगिरिधारीशरणाञ्चु की नित्यप्रति सर्वत्र जय-जय हो ॥ ८ ॥

राधामाधवपादाब्जभक्तिदमष्टकं प्रियम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणात्नेन निर्मितम् ॥ ९ ॥


श्रीराधामाधव पराभक्ति को प्रदान करने वाला रुचिकर
यह अष्टक स्तोत्र जिसकी रचना श्रीराधामाधव भगवान् की कृपा से हुई है ॥ ९ ॥

इति ब्रह्मचारि-श्रीगिरिधारि-शरणाष्टकं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Mohan Chettoor

——
Shri Giridharisharana Ashtakam Stotram

pdf was typeset on January 28, 2023

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

